पाठ-6 अग्नि की उड़ान

पाठ विश्लेषण ,शब्दार्थ

CLASS: V
SESSION NO : 4
SUBJECT : HINDI
CHAPTER NUMBER: 6
TOPIC: अग्नि की उड़ान
SUB TOPIC: पाठ विश्लेषण ,शब्दार्थ

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

शिक्षण उद्देश्य

भारत के लोकप्रिय राष्ट्रपति तथा वैज्ञानिक डॉक्टर ए . पी . अब्दुल कलाम की जीवनी से प्रेरणा लेना ।

ODM PUBLIC SCHOOL

चिंतन-मनन

'अग्नि की उड़ान' पुस्तक डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम के जीवन की ही कहानी नहीं है, बल्कि यह डॉ० कलाम के स्वयं के ऊपर उठने और उनके व्यक्तिगत एवं पेशेवर संघर्षों की कहानी के साथ 'अग्नि', 'पृथ्वी', 'आकाश', 'त्रिशूल' और 'नाग' मिसाइलों के विकास की भी कहानी है ।

ODM PUBLIC SCHOOL

मेरा जन्म मद्रास राज्य (अब तमिलनाडु) के रामेश्वरम् कस्बे में एक मध्यम वर्गीय तमिल परिवार में हुआ था। मेरे पिता जैनुलाब्दीन की कोई बहुत अच्छी औपचारिक शिक्षा नहीं हुई थी और न ही वे कोई बहुत धनी व्यक्ति थे। इसके बावजूद वे बुद्धिमान थे और उनमें उदारता की सच्ची भावना थी। मेरी माँ, आशियम्मा, उनकी आदर्श जीवनसंगिनी थीं। मुझे याद नहीं है कि वे रोज़ाना कितने लोगों को खाना खिलाती थीं, लेकिन मैं यह पक्के तौर पर कह सकता हूँ कि हमारे सामूहिक परिवार में जितने लोग थे, उससे कहीं ज्यादा लोग हमारे यहाँ भोजन करते थे।

ODM PUBLIC SCHOOL

मैं लंबे-चौड़े व सुंदर माता-पिता का छोटी कदकाठी का साधारण सा दिखने वाला बच्चा। हम लोग अपने पुश्तैनी घर में रहते थे। यह घर उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में बना था। रामेश्वरम् की मसजिदवाली गली में बना यह घर चूने पत्थर व ईंट से बना पक्का और बड़ा था। मेरे पिता आडंबरहीन थे और सभी अनावश्यक एवं ऐशो-आराम वाली चीज़ों से दूर रहते थे। घर में सभी आवश्यक चीजें समुचित मात्रा में सुलभता से उपलब्ध थीं। मैं कहूँगा कि मेरा बचपन बहुत ही निश्चिंतता और सादेपन में बीता-भौतिक एवं भावनात्मक दोनों ही तरह से।

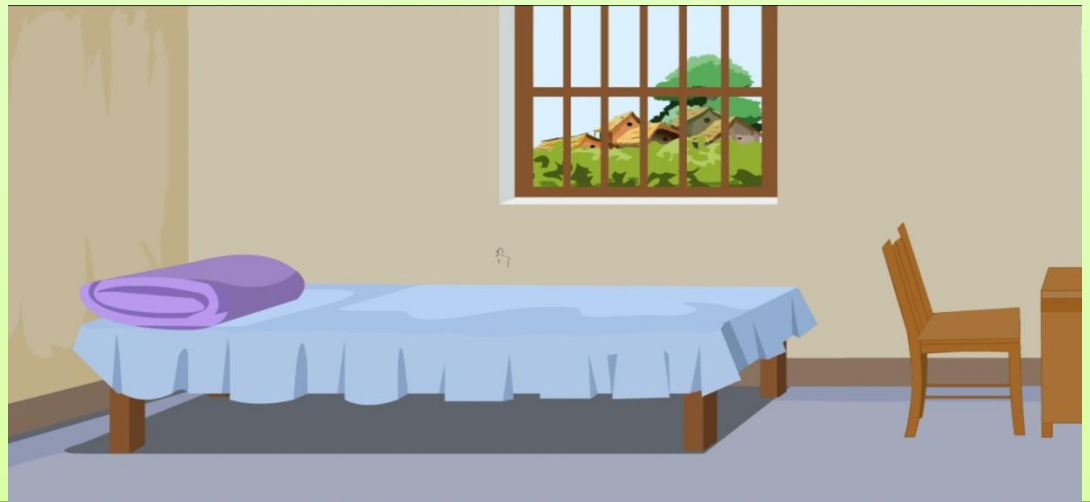

मैं प्रायः अपनी माँ के साथ ही रसोई में नीचे बैठकर खाना खाया करता था। वे मेरे सामने केले का पत्ता बिछातीं और फिर उस पर सुगंधित, स्वादिष्ट साँभर देतीं, साथ में घर का बना अचार और नारियल की ताज़ा चटनी भी होती ।

रामेश्वरम् मंदिर के सबसे बड़े पुजारी लक्ष्मण शास्त्री मेरे पिता जी के अभिन्न मित्र थे। अपने शुरुआती बचपन की यादों में इन दो लोगों के बारे में मुझे सबसे अच्छी तरह याद है, दोनों अपनी पारंपरिक वेशभूषा में होते हैंऔर आध्यात्मिक मामलों पर चर्चाएँ करते रहते। मैंने अपनी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की सारी जिंदगी में पिता जी की बातों का अनुसरण करने की कोशिश की है। मैंने उन बुनियादी सत्यों को समझने का भरसक प्रयास किया है, जिन्हें पिता जी ने मेरे सामने रखा और मुझे इस संतुष्टि का आभास हुआ कि ऐसी कोई दैवी शक्ति ज़रूर है जो हमें भ्रम, दुखों, विषाद और असफलता से छुटकारा दिलाती है तथा सही रास्ता दिखाती है।

जब पिता जी ने लकड़ी की नौकाएँ बनाने का काम शुरू किया, उस समय मैं छह साल का था। ये नौकाएँ तीर्थयात्रियों को रामेश्वरम् से धनुषकोडि तक लाने-ले जाने के काम आती थीं। एक स्थानीय ठेकेदार अहमद जलालुद्दीन के साथ पिता जी समुद्र तट के पास नौकाएँ बनाने लगे। नौकाओं को आकार लेते देखते वक्त मैं काफ़ी अच्छे तरीके से गौर करता था।

पिता जी का कारोबार काफ़ी अच्छा चल रहा था। एक दिन सौ मील प्रति घंटे की रफ़्तार से हवा चलीऔर समुद्र में तूफ़ान आ गया। तूफ़ान में कुछ लोग और हमारी नावें वह गईं। उसी में पायबान पुल भी टूट गया और यात्रियों से भरी ट्रेन दुर्घटनाग्रस्त हो गई। तब तक मैंने सिर्फ़ समुद्र की खूबसूरती को ही देखा था। उसकी अपार एवं अनियंत्रित ऊर्जा ने मुझे हतप्रभ कर दिया।मुझे अपने पिता जी से विरासत के रूप में ईमानदारी और आत्मानुशासन मिला तथा माँ से ईश्वर में विश्वास और करुणा का भाव।

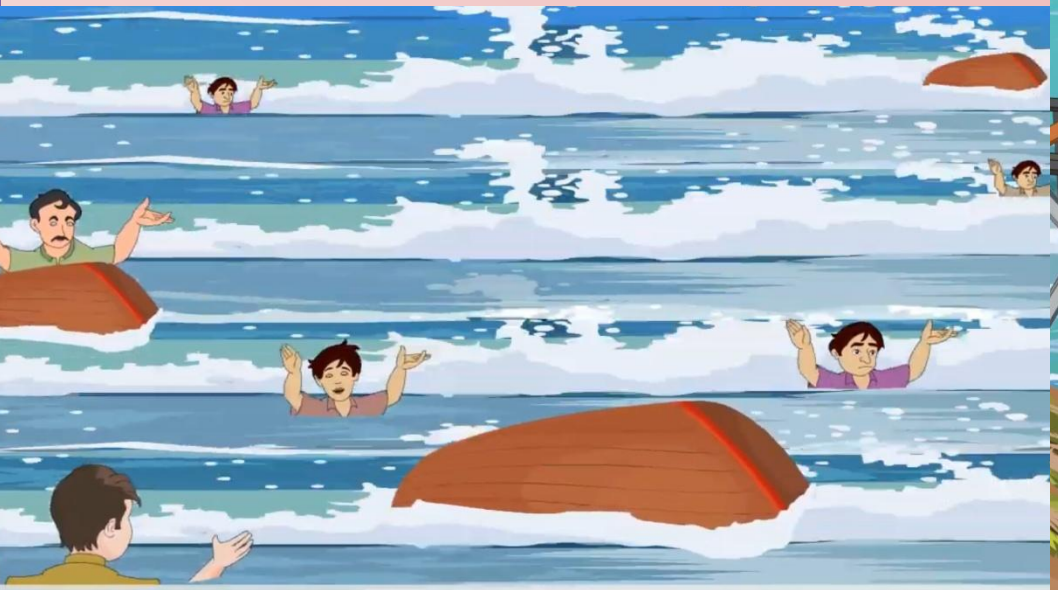

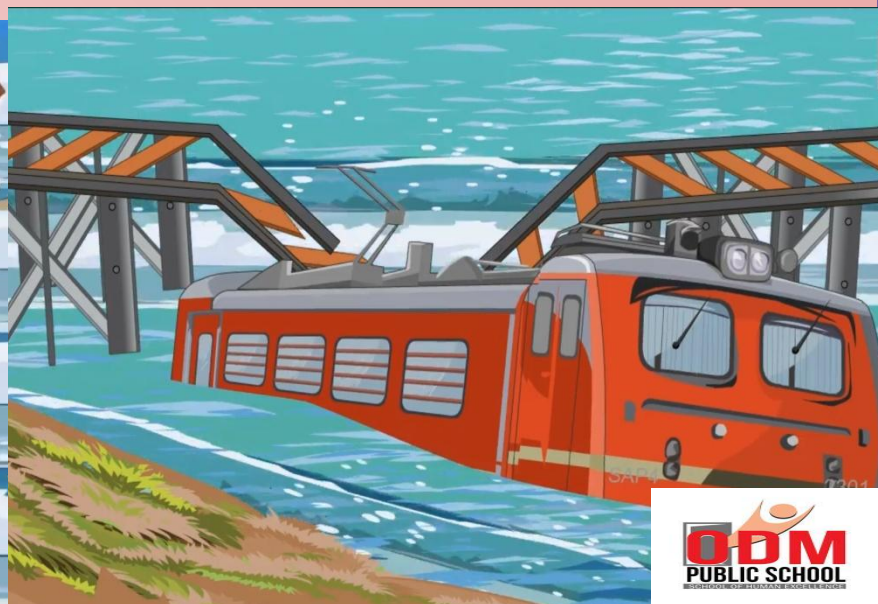

द्वितीय विश्वयुद्ध खत्म हो चुका था और भारत की आज़ादी भी बहुत दूर नहीं थी। गांधी जी ने ऐलान किया - ' भारतीय स्वयं अपने भारत का निर्माण करेंगे।' मैंने अपने पिता जी से रामेश्वरम् छोड़कर जिला मुख्यालय रामनाथपुरम् जाकर पढ़ाई करने की अनुमति माँगी। उन्होंने सोचते हुए कहा, “अबुल ! तुम्हें आगे बढ़ने के लिए जाना होगा। तुम्हें अपनी लालसाएँ पूरी करने और आगे बढ़ने के लिए उस जगह चले जाना चाहिए, जहाँ तुम्हारी ज़रूरतें पूरी हो सकती हैं। " फिर पिता जी मुझे रामेश्वरम् स्टेशन तक छोड़ने आए और कहा, “मेरे बच्चे, ईश्वर तुम्हें खुश रखें। " मेरी सफलता से पिता जी की बहुत बड़ी उम्मीदें जुड़ी थीं। पिता जी मुझे कलक्टर बना देखना चाहते थे और मुझे लगता था कि पिता जी के सपने को साकार करना मेरा फ़र्ज है।

शब्द	अर्थ
औपचारिक	रस्मी ,नियमित शिक्षा, विध्यालयी शिक्षा
उदारता	दयालुता
जीवनसंगिनी	पत्नी
समुचित	उचित
उपलब्ध	प्राप्त
पुश्तैनी	कई पीढ़ियों से चला आ रहा
शताब्दी	सौ साल
वेशभूषा	पहनावा
अनुसरण	पीछे चलना
विषाद	दुख
प्रौद्योगिकी	टेक्नॉलजी,उद्योगों को उन्नत करने की विद्या

शब्द	अर्थ
भरसक	यथा शक्ति ,भरपूर
स्थानीय	स्थान विशेष से संबंधित
कारोबार	व्यवसाय ,कार्य व्यापार
रफ़्तार	गति
अपार	जिसे पर करना कठिन हो
अनुमति	इज़ाजत

गृहकार्य

कठिन शब्द तथा अर्थ कक्षा कार्य कॉपी में दो बार लिखिए ।

ODM PUBLIC SCHOOL

शिक्षण प्रतिफल

भारत के लोकप्रिय राष्ट्रपति तथा वैज्ञानिक डॉक्टर ए . पी . अब्दुल कलाम की जीवनी से प्रेरणा लेंगे ।

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP